राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)

रामावतार शर्मा — अध्यक्ष
महावीर प्रसाद सिंहल — सभाध्यक्ष
देवलाल गोचर — महामंत्री

प्रेस – विज्ञप्ति

शिक्षा वहीं जो संस्कार दें

जयपुर, 02 नवम्बर 2015 – राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के प्रदेश शैक्षिक सम्मेलन के उद्‌घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए वासुदेव देवनानी, शिक्षा राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार ने कहा कि शिक्षा वहीं है जो संस्कार दें। इस हेतु उन्होंने एवं भारत सरकार में मानव संसाधन विकास मंत्री माननीया स्मृति ईरानी ने नयी शिक्षा नीति पर पंचायत से लेकर ऊपर तक सम्पूर्ण राष्ट्र में चर्चा करवायी है ताकि बालकों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देकर उनका बौद्धिक विकास किया जा सके। उन्होंने कहा कि शिक्षा का अर्थ केवल ज्ञान की अभिवृद्धि ही नहीं है बल्कि शिक्षा वह है जो बालक को भावनात्मक व आध्यात्मिक रूप में परिपक्व बनावे। छात्र अपने आदर्श पुरूषों को याद कर उनके जैसा बने व अपने परिवार, समाज और देश के उत्थान हेतु संकल्पित होवें। शिक्षामंत्री ने सरकारी विद्यालयों की स्थिति की चिन्ता करते हुए कहा कि शीघ्र ही तृतीय वेतन श्रृंखला के अध्यापकों को पदोन्नति देकर द्वितीय श्रेणी के माध्यमिक शिक्षा में रिक्तपदों को भरा जावेगा। इसमें वाणिज्य के अध्यापक भी शामिल होगें। उन्होंने सरकारी विद्यालयों में इस सत्र में बढ़े 9 लाख नामांकन वृद्धि के लिये शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि अब आपको इनको स्थिर रखने के लिये परिश्रम करना होगा। स्टाफिंग पैटर्न में रही त्रुटियों को शीघ्र ही दूर किया जावेगा।

प्रहलाद शर्मा, प्रदेश संगठन मंत्री, राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) ने कार्यक्रम में बोलते हुए शिक्षा का नियामक आयोग बनाने की पहल करने के लिये शिक्षा मंत्री जी आभार प्रदर्शित किया। उन्होंने एन.सी.ई.आर.टी. की अनुवादित पुस्तकों के स्थान पर जीवन मूल्यों से ओत–प्रोत पाठ्‌यक्रम लाने के लिये शिक्षा मंत्री जी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शिक्षकों के मांग पत्र पर ध्यान आकर्षित करते हुए उन्होंने कहा कि हमारा शिक्षा मंत्री जी के पास प्रारिम्भक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा व संस्कृत शिक्षा का अलग–अलग मांग पत्र लम्बित है। इस पर शीघ्र चर्चा करते हुए लम्बित मांगों का निस्तारण किया जाये।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता माननीय जे.पी.सिंघल, कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि शिक्षा ही संस्कृति का वाहक है। शिक्षक व समाज तय करे कि शिक्षा के ढाँचे में जो असन्तुलन आया है उसे हमें दूर करना है, इस हेतु हमें पाठ्‌यक्रम में छात्र हित, समाज हित के साथ राष्ट्र हित की बात करनी होगी। हमें श्रम को महत्व देना होगा, शिक्षक को विषय का शिक्षक न बनकर समाज का शिक्षक बनना होगा। हमें ऐसे कार्य करने होंगे जिससे शिक्षा के प्रति समाज की आस्था बढ़े और शिक्षा अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में देवलाल गोचर, प्रदेश महामंत्री, राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) ने महामंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया व संगठन द्वारा वर्ष भर में किये गये कार्यक्रमों की जानकारी दी तथा शिक्षकों को केन्द्र के अनुरूप ग्रेड–पे एवं अन्य सुविधाओं के साथ ग्रामीण भत्ता लागू करने की मांग की।

श्री रामावतार शर्मा, प्रदेशाध्यक्ष, राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में शिक्षकों को आवहान करते हुए कहा कि जापान की प्रगति शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन एवं राष्ट्र भक्त शिक्षकों की नियुक्तियों के कारण हुई, इसलिये भारत में भी जापान का अनुसरण करते हुए शिक्षा नीति में परिवर्तन करने की आवश्यकता पर जोर दिया। मंच पर संरक्षक श्री नानक कुन्दनानी एवं राजनारायण शर्मा भी उपस्थित थे।

प्रातःकालीन सत्र में श्री जयदेव पाठक स्मृति व्याख्यान माला का आयोजन हुआ, जिसके मुख्य वक्ता माननीय कैलाश चन्द्र शर्मा, क्षेत्रीय बौद्धिक प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ थे। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने आवहान किया कि शिक्षकों को अपने कार्य को जोब (कार्य) के रूप न लेकर होबी (अभिरूचि) के रूप में लेवे क्योंकि कार्य करने से मानव शरीर में थकान का अनुभव होता है जबकि होबी में मानव शरीर को स्फूर्ति मिलती है। व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता श्री चौथमल सनाढ्‌य व संचालन श्री उमराव लाल वर्मा, संरक्षक ने की।

कार्यक्रम के संयोजक बसन्त जिन्दल ने कार्यक्रमों में आये अतिथियों का स्वागत किया एवं नवीन कुमार शर्मा, उपाध्यक्ष (मा. क्षेत्र) ने कार्यक्रम का संचालन किया।

सादर प्रकाशनार्थ
श्रीमान् सम्पादक महोदय

भवदीय

(ताराशंकर शर्मा)
जिला मंत्री जयपुर द्वितीय
मो. 9530167807